प्रातःक्लास ओमशांति 27.9.67

ओमशांति। अपन को आत्मा समझकर बैठो। देह अभिमान छोड़ बैठो। बेहद का बाप बच्चों को समझाय रहे हैं। समझाया उनको जाता है जो बेसमझ होते हैं। आत्मा कहती है कि बाप सच कहते हैं। हम आत्मा कितनी बेसमझ बन गए हैं। मैं आत्मा अविनाशी हूं। शरीर विनाशी है। मैं आत्म अभिमानी छोड़ देह अभिमानी में फंस मरा हूं। तो बेसमझ ठहरे ना। बाप कहते हैं सब बच्चे बेसमझ बन पड़े हैं देहाभिमानी बनकर। फिर तुम बाप द्वारा देहीअभिमानी बनते हो। तो बिल्कुल समझदार बन जाते हो। कोई तो बन गए हैं। कोई पुरुषार्थ करते रहते हैं। आधा कल्प लगा है बेसमझ बनने में। इस अंतिम जन्म में फिर समझदार बनना है। आधा कल्प से बेसमझ होते2 100प्रतिशत बेसमझ बन गए हैं। देहाभिमान में आय ड्रामाप्लैनअनुसार तुम गिरते आए हो। अब तुमको समझ मिली है। फिर भी बहुत पुरुषार्थ करना है ;क्योंकि बच्चों में दैवी गुण भी चाहिए। बच्चे जानते हैं हम सर्वगुण सम्पन्न.....थे फिर इस समय निर्गुण बन गए हैं। कोई भी गुण न रहा है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार इस खेल को समझते हो। समझते2 भी कितने वर्ष हो गए हैं। फिर भी जो नये हैं वह अच्छे समझदार बनते जाते हैं। औरों को भी बनाने का पुरुषार्थ करते हैं। कोई ने तो बिल्कुल ही नहीं समझा है। बेसमझ के बेसमझ ही हैं। बाप आये ही हैं समझदार बनाने। बच्चे समझते हैं माया के कारण हम बेसमझ बन गए हैं। हम पूज्य थे तो समझदार थे फिर हम पुजारी बन गए हैं। आदि सनातन देवी देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। इनका दुनियां में किसको पता नहीं। यह लक्ष्मी–नारायण कितने समझदार थे। राज्य करते थे। बाप कहते हैं ततत्वम्। तुम भी अपने लिए ऐसे समझो। यह बहुत समझने की बातें हैं। सिवाय बाप के कोई समझाय न सके। अभी महसूस होता है बाप ही उंच ते उंच समझदार ते समझदार होगा ना। एक तो ज्ञान सागर भी है ,सर्व का सदगतिदाता भी है। पतित–पावन भी है। एक की ही महिमा है। इतना उंच बाप .....बच्चे2 कह कैसे अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चे अब पावन बनना है। इसके लिए बाप एक ही दवाई देते हैं। कहते हैं योग से तुम 21जन्म भविष्य निरोगी बन जावेंगे। तुम्हारे सब.....दुःख खतम हो जावेंगे। सब दुःख दूर हो जावेंगे। तुम मुक्तिधाम में चले जावेंगे। अविनाशी सर्जन पास एक ही दवाई है। एक ही इंजेक्शन आत्मा को आय लगाते हैं। ऐसे नहीं कि वह बैरिस्टरी भी करेगा, इंजीनियरिंग भी करेगा। नहीं। हरेक आदमी अपने धंधे को ही लग जाते हैं। बाप को कहते भी है आय कर पतित से पावन बनाओ ;क्योंकि पतितपने में दुःख है। पावनपने में सुख है। शांतिधाम को पावन दुनियां नहीं कहेंगे ना। स्वर्ग को पावन दुनियां कहेंगे। यह भी समझाया है मनुष्य शांति और सुख चाहते हैं। सच्ची2 शांति तो वहां है जहां शरीर नहीं है। इसको कहा जाता है शांतिधाम। बहुत कहते हैं शांति में रहें ;परंतु ला नहीं है। वह तो पार्टधारी नहीं। बच्चे नाटक को भी समझ गए हैं। जब एक्टर्स का पार्ट होगा तब बाहर स्टेज पर आय पार्ट बजावेंगे। यह बेहद की बातें बेहद के बाप ही आय समझाते हैं। ज्ञान सागर उनको कहा जाता है। वह ही सर्व का सदगतिदाता ,पतित–पावन है। सर्व को पावन बनाने वाले तत्व नहीं हो सकते। पानी आदि यह सब तो तत्व हैं ना। वह कैसे सदगति करेंगे। यह भी समझाया है आत्मा ही पार्ट बजाती है। यह बातें भी जो समझू हैं वह ही समझ सकते हैं। बाबा ने कितना समझाया है कोई ऐसे युक्ति रचो जो मनुष्य समझे कि कैसे पूज्य से पुजारी बनते हैं। पूज्य है नई दुनियां में। पुजारी है पुरानी दुनियां में। पावन को पूज्य, पतित को पुजारी। पतित को पूज्य नहीं कह सकते। यहां पतित तो सभी हैं ;क्योंकि भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। वहां है श्रेष्ठ। गाते भी हैं सम्पूर्ण श्रेष्ठाचारी। अभी तुम बच्चों (को) ऐसा बनना है। मेहनत है। मुख्य बात है याद की। सभी कहते हैं याद में रहना बड़ा मुश्किल है। हम जितना चाहते हैं याद में रह नहीं सकते हैं। कोई सच्चाई से अगर चार्ट लिखते हैं तो बहुत फायदा हो सकता है। बाप बच्चों को यह ज्ञान देते हैं मन्मनाभव। तुम अर्थ सहित कहते हो। बाकी सारी दुनियां अनर्थ में है। तुमको बाप .....अर्थ समझाते हैं। मनुष्य लोग विद्वानों को बहुत उंच समझते हैं। जितना बड़ा विद्वान

इतना उनको सब नमन करते हैं ;परंतु वो कितना अनर्थ करते हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूं जब मेरी बहुत ग्लानी करते हैं। सर्व का सदगति दाता ,पतित–पावन उनकी ही सबसे जास्ती ग्लानी करते हैं। (गायन) भी है यदा2.....सिर्फ भारत का नाम ही क्यों लेते हैं?दूसरे भी इतने गांव हैं। उनका नाम क्यों नहीं लेते हैं। खुद आते ही भारत में हैं ;परंतु पत्थर बुद्धि मनुष्य समझते नहीं हैं। तुम किसी को कहो पत्थर बुद्धि तो बिगड़ पड़ेंगे। बाप आते ही हैं पत्थरबुद्धियों को पारस बुद्धि बनाने। कृष्ण है ही पारसनाथ। बच्चे से फिर बड़ा बनता है। यह किसी को पता नहीं है। इस समय पारसनाथ नहीं है। पारसपुरी ही तो नहीं है। पारसपुरी को गोल्डन एज कहा जाता है। यह बातें अच्छी रीति धारण करो। बाप से कई प्रकार के प्रश्न पूछते हैं। बाप करके दिल लेने लिए कुछ कहते हैं ;परंतु बाप कहते हैं मेरा काम ही है पतित से पावन बनाना। मुझे तुम बुलाते ही इसलिए हो। तुम जानते हो हम आत्मा शरीर सहित पावन थे। अभी वो ही आत्मा शरीर सहित पतित बनी है। 84जन्मों का हिसाब है ना। 84लाख कहने से मनुष्य मूंझ पड़े हैं। कितना बड़ा गपोड़ा लगा दिया है। बड़े2 विद्वान लोग कहते हैं कि ब्रह्मा भी उतर आवे तो भी हम शास्त्रों का आधार नहीं छोड़ेंगे। उनको बोलो तुम ब्रह्मा किनको कहते हो?वो कहां है?कौन सा ब्रह्मा?ब्रह्मा को कब देखा है?उनका चित्र दिखावेंगे?परंतु पूछे कौन?वो लोग घमंड वाले ऐसे होते हैं बिगड़कर गाली देने लग पड़ेंगे। वो तो हैं हठयोगी। दुर्वासा मिसल बहुत ही क्रोधी होते हैं। देह का अहंकार बहुत ही रहता है। वो देहीअभिमानी हो नहीं सकते हैं। देही अभिमानी बनना है। एक बाप ही आकर सिखाते हैं। अगर वो देही अभिमानी होते तो बाप को सर्वव्यापी कभी नहीं कहते। बाप कहते हैं कितने ठिक्कर बुद्धि बन गए हैं। गवर्मेंट पास साधु समाज जाकर कहते हैं कि गउ कोस बंद करो। अब यह तो घाटे की बातें हैं ना। यहां से चमड़ा कितना निकलता है। लाखों की आमदनी है। बड़ी इन्डरसिटरी है ना तो वो बंद कैसे करेंगे?इन बातों को वो लोग समझ नहीं सकते हैं। वो तो सिर्फ ब्रह्म2 कहते रहते हैं। बाप कहते हैं यह उनका भ्रम है। पवित्र रहते हैं बाकी ज्ञान तो कुछ भी नहीं है। बाप को और रचना के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते तो गोया जंगली जनावर ही ठहरे। यह है ही कांटों का जंगल। यह ल.ना. तो फूल है ना। इनके आगे कांटे जाकर कहते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न.....हम पापी,कपटी.....हैं। काम का सबसे बड़ा कांटा है। बाप कहते हैं कि इन पर जीत पहन कर जगतजीत बनो। बाबा ने कितना बारी कहा है कि जो गीता को जानने वाले हैं 5/8 मुख्य श्लोक निकालो। गीता बनाई हुई तो है। उनसे अच्छी चीज को हम उठावेंगे। हमारे पास जो अच्छे गीता को जानने वाले अभ्यासी हैं जैसे रमेश–उषा हैं। सारी गीता कण्ठ रहती है ;परंतु बाबा को ऐसा कोई भी करके नही दिखाते हैं। बाबा कहते ही रहते हैं कि श्लोक निकाल कर भेजो तो फिर बाबा युक्ति बतावेंगे उस पर समझाने की कि कैसे2 किनको पकड़ो ;क्योंकि गीता है ही सर्व शास्त्रमई शिरोमणि श्रीमतभगवत गीता। भगवान का शास्त्र है ना। उससे ही वर्सा मिल सकता है। बाकी रचना से वर्सा थोड़े ही मिलता है। गीता ही माईबाप है। अच्छी रीति पकड़ना चाहिए। प्वाइंट्स नोट करनी चाहिए। आर्टीकल्स भी लिखनी है। फलाने से बात की तो उसने कहा ब्रह्मा भी उतर आवे तो हम शास्त्रों को तो नहीं छोड़ेंगे। तो यह तो भक्ति हुई ना। शास्त्र पढ़ना ही माना भक्ति है। फिर श्लोक दिखाना चाहिए कि भगवान कहते हैं वेद–शास्त्र ,जप–तप आदि से मुझे कोई भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इनका अर्थ तो वो समझते नहीं हैं। कहते भी हैं भगवान को कोई ना कोई रूप में आना ही है। भागीरथ पर विराजमान हो आना है। भगवान को आना ही है। पुरानी दुनियां को नया बनाना ही है। नई दुनियां को सतोप्रधान

पुरानी दुनियां को तमोप्रधान कहा जाता है। जबकि अभी पुरानी दुनियां है तो जरूर बाप को ही आना पड़े। बाप को ही कहा जाता है। तुम बच्चों को कितना सहज समझाते हैं, कितनी खुशी होनी चाहिए। बाकी किनका कर्मभोग का हिसाब–किताब है, कुछ भी है तो इसमें हमारा क्या?हमको बुलाते ही हैं बाबा आकर हमको वर्सा दो। बाबा से क्या वर्सा पाना चाहते हो?मुक्ति–जीवनमुक्ति। मुक्ति–जीवनमुक्ति का दाता एक ही ज्ञान सागर बाप है। इसलिए ही उनको ज्ञानदाता कहा जाता है। भगवान ने दिया था ;परंतु कब दिया ,किसने दिया वो किसी को भी पता नहीं है। सारा मोझारा(मुंझारा) ही इसमें है। किनको ज्ञान दिया वो भी पता नहीं है। अब यह बैठे हैं। इनको पता हुआ है कि हम सो था फिर 84जन्म भोगे। यह नम्बरवन में बाबा बताते हैं। मेरी तो आंख ही खुल गई। तुम भी कहेंगे हमारी तो आंखें ही खुल गई। तीसरा नेत्र तो खुलता है ना। तुम कहेंगे हमको बाप का, सारी सृष्टि के चक्र का पूरा ज्ञान मिल गया है। मैं जो आत्मा हूं मेरी आंखें खुल गई हैं। कितना वंडर है। हम आत्मा फर्स्ट हैं और हम अपने को फिर देह समझ बैठा। आत्मा कहती है कि हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूं। फिर भी हम अपने को आत्मा भूल देहअभिमानी बन जाते हैं। कितने मूर्ख बन गए हैं। इसलिए ही अब तुमको अब पहले यह समझ देता हूं कि अपने को आत्मा समझ बैठो। अंदर में यह बैठकर घोंटो कि मैं आत्मा हूं। आत्मा अपन को ना समझने से बाप को भी भूल जाते हो। फील करते हो?बरोबर हम बार2 देहअभिमान में आ जाते हैं। मेहनत करनी है। यहां बैठो तो भी आत्मअभिमानी होकर बैठो। बाप कहते हैं हम तुम बच्चों को राजाई देने आये हैं। आधा कल्प तुमने हमको याद किया है। सन्यासी आदि कोई भी ऐसे कह नहीं सकते हैं कि तुम मेरे आधा कल्प के आशिक हो। मैं तुम्हारा माशूक हूं। नहीं। बाप कहते हैं तुम सब मेरे आशिक हो। यह भी तो तुम भूल गए हो तो जनावर ठहरे ना। कोई भी बात सामने आती है तो कहते हैं कि हाय खम(राम);परंतु ईश्वर कौन है यह किसी को भी पता नहीं है। यह सिद्ध कर बताना है कि ज्ञान का सागर पतित–पावन बाप ही है। ज्ञान दाता ,सर्व का सदगति दाता त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव ही है। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर तीनों का जन्म इकट्ठा ही है। सिर्फ शिव जयंति ही नहीं है ;परंतु त्रिमूर्ति शिव जयंती है ;पंरतु किसी को भी पता नहीं है। जरूर जब शिवबाबा की जयंति होगी तो ब्रह्मा की भी होगी। शिव की जयंति कुछ मनाते हैं ब्रह्मा ने क्या किया?लौकिक–पारलौकिक यह फिर अलौकिक बाप है ना। यह प्रजापिता ब्रह्मा है अलौकिक। इनका तो कुछ भी मनाते नहीं हैं। हे भगवान कहकर याद करते हैं ;परंतु जानते तो कुछ भी नहीं हैं। शंकराचार्य को बोलो कौन सा ब्रह्मा भी उतर कर आवेगा कैसे आवेगा?क्या उस रूप से ही नीचे चला आवेंगे?क्या होगा?तुम जानते हो उतरेंगे तो कोई भी नहीं। यह ब्रह्मा उपर चले जावेंगे ;पंरतु देरी है। यह लोग अभी तुम्हारे पेंच में नहीं आवेंगे। एक भी अगर आ जावे तो सभी उनको कहेंगे ब्रह्माकुमारियों ने तुम पर जादू लगाया है। थोड़े–बहुत तुम्हारे तरफ आ जावे तो रिवोल्यूशन हो जावे। गीता का भगवान परमपिता शिव है ,यही बड़े ते बड़ा रोला है। तुम्हारी जीत इसमें ही होनी है। यह है नम्बरवन भूल। शिरोमणी गीता को झूठा बना दिया है। बाप कहते हैं कोई भी शास्त्र से गति–सदगति मिल नहीं सकती है। सबको पार्ट बजाने आना ही है। कहते हैं फलाना ज्योति ज्योत समाया। निर्वाणधाम गया ;परंतु जाता तो कोई भी नहीं है। बाप कहते हैं कि नई दुनियां के लिए यह नया ज्ञान अभी मिलता है। फिर प्रायःलोप हो जाता है। जिसको बाप रचता और रचना का ज्ञान नहीं तो अज्ञानी ठहरे ना। अज्ञान नींद में सोये हुए हैं। ज्ञान से है दिन। भक्ति तो है रात। शिवरात्री का भी कोई अर्थ थोड़े ही जानते हैं। इसलिए ही उसकी होली डे भी उड़ा दी है। अभी तुम जानते हो बाप आते ही हैं सभी की ज्योति जगाने। तुम यह

बत्तियां आदि जगावेंगे। समझेंगे तो इनका कोई बड़ा दिन है। अब तुम तो जगाते हो अर्थ सहित। वो लोग थोड़े ही समझेंगे। तुम्हारे भाषण से भी पूरा समझ नहीं सकते हैं। तुम तो अभी बंदर से मंदिर बनते हो। अभी सारे विश्व पर रावण का राज्य है। तुम भी महसूस करते हो बरोबर हम तो बंदर से भी बदतर थे। बंदर में 5विकार जोरदार होते हैं। मनुष्यों में भी तो देखो कितने विकार हैं। बंदर का कब भी पेट फाड़कर बच्चे नहीं निकालते हैं। बिच्छुअरी का फटता है। आजकल तो माताओं के पेट चीरकर बच्चा निकलते हैं। वहां पर कैसा अच्छा जन्म होता है, जैसे कि फूल पैदा होता है। कचरा आदि कुछ नहीं होता है। यहां तो मनुष्य कितने दुःखी हैं। रिद्धी–सिद्धी वाले भी बहुत तंग करते हैं। अखबारों में भी पड़ता है कि इनमें ईविल सोल है। बहुत दुःख देती है। रिद्धी–सिद्धी तो बहुत होती है। कोई को कहेंगे तुम तो बहुत सुंदर हो। बस, एकदम काले हो जावेंगे। ऐसे2 बहुत ही करते हैं। एक/दो को दुःख देते हैं। बाबा कहते हैं कि इन बातों में बाप क्या कर सकते हैं?बाप तो है ही पतित दुनियां को पावन बनाने वाला। और कोई बातों में तो कनेक्शन ही नहीं है। बाप तो सीधी बात बताते हैं। तुम मुझे सर्वशक्तिवान पतित–पावन कहते हो। वो मैं कैसे पावन बनाता हूं सो तो जब तुमको समझाउं ,पावन बनाउं तब ही तुमको तो पता होवे। तुमको कहता हूं कि अपने को आत्मा समझ और मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। बाकी और कोई भी धंधे आदि लिए मैं नहीं आया हूं। ऐसे नहीं भगवान कोई बिगड़ी को बना देंगे। मकान बना देंगे। कहते हैं कि भगवान हो तो मक्खी को जिन्दा करके दिखाओ। अरे, भगवान को सिर्फ यही धंधा बैठकर करना है क्या?उनको तो कहते ही हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ। सुख–शांति दो। दुःख हरो। तो मैं उसका ही रास्ता बताता हूं। बाकी कुछ भी बीमारी आदि है वा कुछ भी है तो जाओ साधु–सन्तों के पास। सारी दुनियां अति बीमार,रोगी है। मैं एक2 को बैठ दवा करुंगा क्या?सतयुग है निरोगी दुनियां। यह है रोगी दुनियां। मैं तुमको प्योर होने का रास्ता बताता हूं। तूफान तो बहुत ही आवेंगे। तुमको तो विकारों पर जीत पानी है ना। मेहनत करते2 तुम्हरी विजय हो ही जावेगी। तुम जानते हो अभी दैवी राजधानी की स्थापना हो रही है। आसुरी राज्य खतम होना है। कितना बाप समझाते हैं ;परंतु आधा कल्प से माया ने बिल्कुल ही चट कर दिया है। पत्थर बुद्धि है। अभी तुम बच्चे कहते हो बाबा हम नर से नारायण तो जरूर ही बनेंगे। लक्ष्य ही यही है। इनको ही राजयोग कहा जाता है। भगवानोवाच्य है कि मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। सारी दुनियां को उत्तम बनना है। चाहते हैं मुक्तिधाम में जावें ;परंतु आत्मा प्योर होने बिना जा नहीं सकती है। सवाय बाप के प्योर कोई यह बना नहीं सके। पवित्रता का सागर बाप कहते हैं कि मैं हूं। मैं इनमें प्रवेशकर तुमको रास्ता बताता हूं। अभी तुमको उस पर ही चलना है। तुमको सिर्फ श्रीमत देते हैं कि आत्मअभिमानी बनो। बस। और बातों से मैं क्या करूं?मैं तो तुम्हारा आधा कल्प का माशूक हूं। वो पारलौकिक बाप यह तो है अलौकिक बाप। प्रजापिता ब्रह्मा को तो सब जानते ही हैं। प्रजापिता तो जरूर यहां पर ही होगा ना। बाप कहते हैं कि मैं ब्रह्मा द्वारा तुमको सभी वेदों–शास्त्रों का, सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान सुनाता हूं। ..... भी अपने जन्मों को नहीं जानते। अब तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम ब्राह्मण ही सो फिर विष्णुपुरी का मालिक बनते हैं। त्रिमूर्ति के चित्र से शिवबाबा का चित्र निकाल दिया है। उनका चित्र तो जरूर बनाना चाहिए ना। उनका फिर अलग बना दिया है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना,शंकर द्वारा विनाश कौन करवाते हैं? कुछ भी नहीं समझते हैं। बाप कब भी किसको भी घर–बार (छोड़ने के लिए नहीं कहेंगे।) यह तो पहले भट्ठी बननी ही थी। ड्रामा में पार्ट था। सबको कशिश हुई और चले आये। ईंटों की भी भट्ठी बनती है ना। फिर कोई तो बहुत अच्छी और कोई2 बिग्गर निकलती हैं। ऐसे ही यहां है। ओम।